छत्तीसगढ़ का इतिहास

- **इतिहास :–**
  इतिहास न केवल भूतकाल से सम्बन्धित है वर्तमान और भविष्य से भी इसका सम्बन्ध है। अतीत (भूतकाल) की घटनाओं से हम वर्तमान में प्रेरणा लेकर भविष्य के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं या भविष्य के प्रति सजग रहते हैं। इतिहास पृथ्वी के धरातल पर घटित सभी घटनाओं का द्योतक है जो चाहे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक अथवा सांस्कृतिक हो। यह सभी इतिहास की सीमा में आता है। इस प्रकार इतिहास समय सीमा में मानव विकास की प्रक्रिया का आलेख है अर्थात् समय अनुकूल मानव के क्रमिक विकास की कहानी ही इतिहास है।

- **छत्तीसगढ़ का इतिहास :–**
  प्राचीन समय में यह क्षेत्र दक्षिण कोसला के नाम से जाना जाता था। छठी और 12 वी शताब्दी के बीच शरभपुरी, पांडूवंशी, सोमवंशी, कालाचुरी और नागवंशी शासको ने क्षेत्र पर राज किया। 11 वी शताब्दी में छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र पर चोल साम्राज्य के राजेन्द्र चोल प्रथम और कुलोथुंगा चोल प्रथम ने आक्रमण किया था। 1741 से 1845 तक छत्तीसगढ़ मराठा साम्राज्य के नियंत्रण में था।
  1845 से 1947 तक छत्तीसगढ़ पर ब्रिटिशो का नियंत्रण था। 1845 में ब्रिटिश के आगमन के साथ ही रतनपुर की जगह पर रायपुर ने शोहरत हासिल कर ली। 1905 में संबलपुर जिले को ओडिशा में स्थानांतरित किया गया और सरगुजा राज्य को बंगाल से छत्तीसगढ़ स्थानांतरित किया गया।

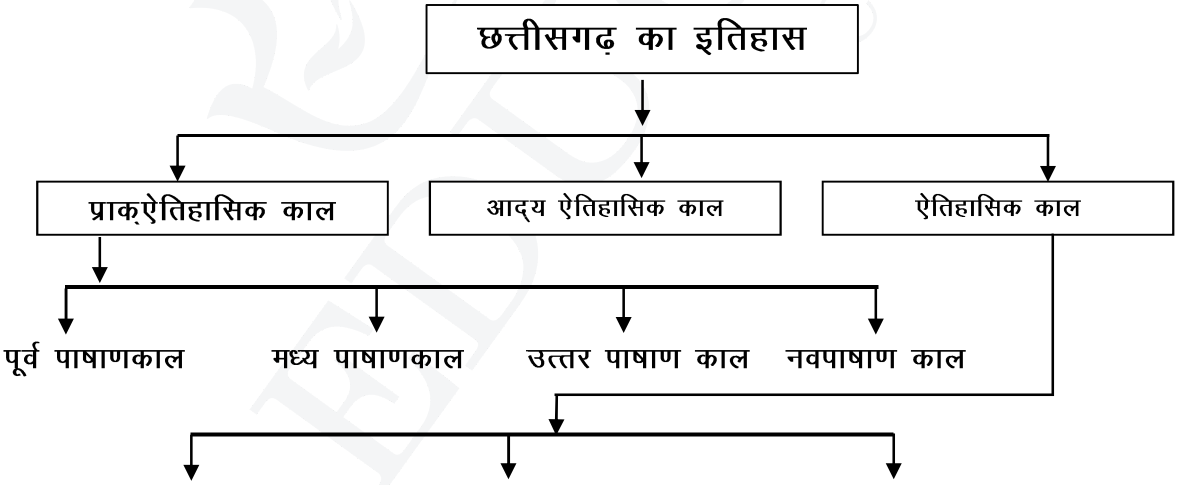

प्राचीन इतिहास
- बौद्ध कालीन
- जैन कालीन
- महाकात्यकाल
- मौर्यवंश
- सातवाहन वंश
- कुषाण वंश
- मेघवंश
- वाकाटक वंश
- नल–नाग वंश
- गुप्तवंश
- राजर्षितुल्य वंश
- शरभपुरी वंश
- पांडु वंश
- बाण वंश
- बस्तर के सोमवंश
- मैकल के पाणुवंश

मध्यकालीन इतिहास
- रतनपुर के कलचुरी
- रायपुर के कलचुरी
- फणीनागवंश
- छिंदक नागवंश
- काकतीय वंश
- कांकेर के सोमवंश

आधुनिक इतिहास
- काकतीय वंश
- छ.ग. में मराठा शासन
- छ.ग. में ब्रिटिश शासन
- छ.ग. का निर्माण

प्रागैतिहासिक काल
(Pre Historical Age)

- प्रागैतिहास (Prehistory) मानव अतीत के उस भाग को प्रागितिहास कहते हैं जबकि मानव का अस्तित्व तो था परन्तु लेखन कला का आविष्कार अभी नहीं हुआ था।
- विश्व इतिहास में लेखन कला का आरंभ सबसे पहले मेसोपोटामिया सभ्यता में लगभग 3200 ई.पू. से माना जाता है, इस तरह प्रागैतिहास, लगभग 33 लाख साल पहले होमिनिन मानव द्वारा पत्थर के उपकरणों के प्रथम उपयोग और 3200 ई.पू. में लेखन प्रणालियों के आविष्कार के बीच की अवधि है।
- प्रागैतिहासिक काल को चार भागों में बाँटा गया है :–
  1. पूर्व पाषाणकाल 2. मध्य पाषाणकाल 3. उत्तर पाषाणकाल 4. नव पाषाणकाल

1. पूर्व पाषाणकाल :–

पूर्व पाषाण काल (Palaeolithic) प्रागैतिहासिक युग का वह समय है जब मानव ने पत्थर के औजार बनाना सबसे पहले आरम्भ किया। यह काल आधुनिक काल से 25–20 लाख साल पूर्व से लेकर 12,000 साल पूर्व तक माना जाता है। इस दौरान मानव इतिहास का 11% विकास हुआ। इस काल के बाद मध्यपाषाण युग का प्रारंभ हुआ जब मानव ने खेती करना शुरु किया था।

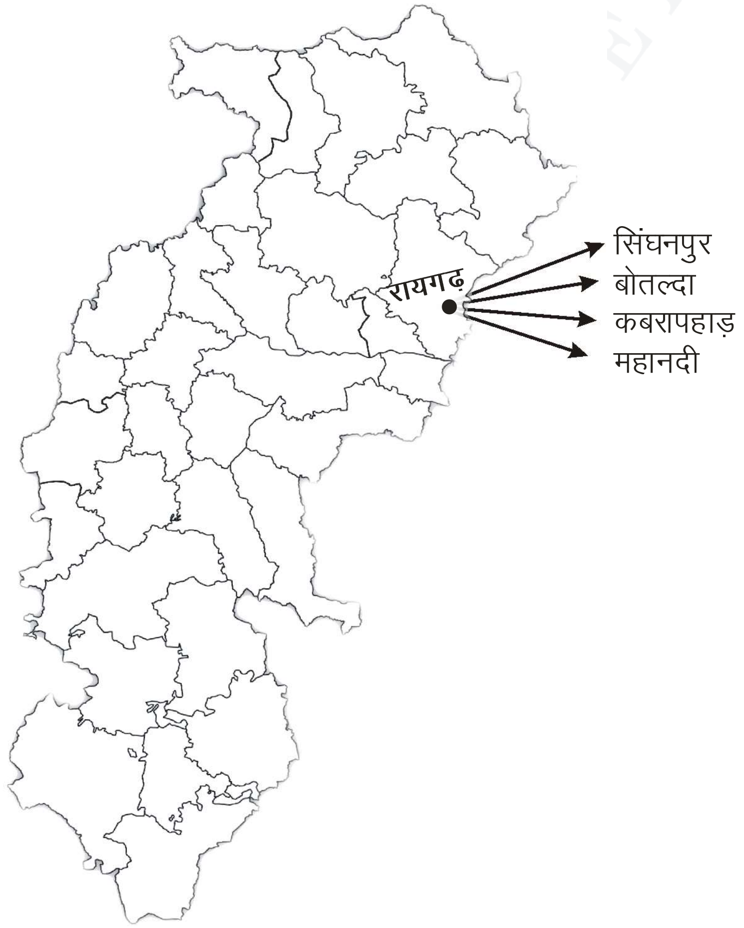

- पूर्वपाषाण काल में मानव जाति के होने का साक्ष्य पाया गया है।
- छत्तीसगढ़ में स्थित रायगढ़ के सिंघनपुर के गुफाओं से अनेकों शैलचित्र पाये गये हैं।
- छत्तीसगढ़ का महानदी घाटी, कबरा पहाड़ व बोतल्दा पूर्व पाषाणकालीन प्रसिद्ध स्थल है।

- महानदी घाटी एवं सिंघनपुर की गुफाएँ – सिंघनपुर में पूर्व पाषाण काल के अनेक शैलचित अंकित है। जिसमे सीधी, आकार की एवं सीधीनुमा मानवाकृति, शिकार करता हुआ मनुष्य, पत्थर के हस्तचलित कुदाल, हेमेटाइटपेसल (मूल) आदि प्रमुख है। सिधनपुर को यह चित्रकारी गहरे लाल रंग की है।
- पूर्व पाषाणकाल के साक्ष्य रायगढ़ में कबरा पहाड़ बोल्दा छापामाड़ा, भदरखोल, गीधा सोनबरसा में पाया गया है।

2. **मध्यपाषाण काल :–**

मध्यपुरापाषाणकाल मे शल्क उपकरणों का प्रयोग बढ़ गया। मुख्य औजार के रूप में पत्थर की पपड़ियों से बने विभिन्न प्रकार के फलक, वेधनी, छेदनी और खुरचनी मिलते हैं। हमें वेधनियाँ और फलक जैसे हथियार भारी मात्रा में मिले है।

- मध्य पाषाणकाल में रायगढ़ के कबरा पहाड़ से लाल रंग की छिपकली, सांभर व घड़ियाल, कुल्हाड़ी आदि के भित्ति चित्रकारी प्राप्त हुए हैं।
- बस्तर संभाग के राजपुर में भी मानव जाति के साक्ष्य पाये गये हैं। वहीं बस्तर के कालीपुर खडागघाट, घाटलोहांग, भातेवाडा, राजपुर से मध्यपाषाणकाल के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- गढ़धनौरा से मध्यपाषाणकालीन अर्द्धचंद्राकार 500 पाषाण घेरे प्राप्त हुए है जिसका प्रयोग शवों को दफनाने के लिये किया जाता था।

➢ अन्य प्रागैतिहासिक कालीन छत्तीसगढ़ में स्थल

क्र.	स्थान	जिला	विशेष
1.	**उड़कुरा**	कांकेर	• एलियन का चित्रण
2.	**चितवा डोंगरी**	राजनांदगांव	• चीनी ड्रैगन
3.	**सिंघनपुर**	रायगढ़	• सबसे सप्राचीनतम शैलचित्र • मनुष्य समूह • सीढ़ी से आखेट करता मनुष्य
4.	**कबरा पहाड़**	रायगढ़	• लाल रंग की छिपकली • सर्वाधिक शैलचित्र
5.	**करमागढ़**	रायगढ़	• जलचर प्रणी के चित्र सांप, मछली, मेढक
6.	**बेलीपाठ**	रायगढ़	• मछली व पुष्पलताओं का चित्र
7.	**खैरपुर**	रायगढ़	• अंधेर में चमकते शैल चित्र
8.	**टीपाखोल**	रायगढ़	• मानव व पशुओं के अंधेर में चमकते चित्र
9.	**बोतल्दा**	रायगढ़	• प्राग ऐतिहासिक कालीन सबसे लम्बी गुफा सूर्य मंदिर के अवशेष (गुप्तकालीन)
10.	**भैसगढ़ी**	रायगढ़	• शैलचित्र.
11.	**ओगना**	रायगढ़	• पुष्पलताओं व पक्षी का चित्रण

महापाषाण कालीन छत्तीसगढ़

- **गढ़धनौरा** – 500 अर्धचन्द्राकार घेरे मिले है इसको मुख्यतः शवों को दफनाने के लिए किया जाता है। इसका सर्वेक्षण जे. आर. कांबले एवं डॉ. रमेन्द्रनाथ मिश्र ने किया था।
- **दुर्ग संभाग** – करहीभदर (पाषाणघेरे के अवशेष मिले है।)
  चिरचारी, सोरर, करकाभाठा
- इसके अलावा बालाघाट के गुंगेरिया नामक स्थान में ताँबे के औजार तथा कालाहान्डी जिले के नवापारा तहसील सोनाभीर ग्राम से पाषाण घेरे प्राप्त हुए हैं।

ताम्र एवं लौह युगीन छत्तीसगढ़

- बालोद के **करकाभाटा** से लोहा गलाने का बर्तन प्राप्त हुआ है।
- सरगुजा के सीतावेगरा व जोगीमारा से लौह पात्र मिले है।
- जशपुर में प्रागऐतिहासिक कालीन औजार, छायास्तंभ एवं समाधि प्राप्त हुए है।
  - ✓ **समाधि** – आरा, बागुरकेला, जवमरगा
  - ✓ **औजार** – रानीदाह, मनोरा, बगीचा, पंचभईया, दुलदुला
  - ✓ **छायास्तंभ** – बगुरकेला (ग्रामीण पूजा स्थल)

➢ महत्वपूर्ण तथ्य :–

- सबसे लम्बी गुफा – बोतल्दा की गुफा
- सर्वाधिक शैलचित्र – कबरा पहाड़
- सबसे प्राचीन गुफा – सिंघनपुर व कबरा पहाड़
- अमरनाथ दत्त ने 1910 ई. में अनेकों गुफा व शैलचित्रों की खोज की थी।
- रायगढ़ को ''शैलाश्रयों का जिला'' कहा जाता है।
- सबसे पहले एंडरसन ने 1910 में पूर्वपाषाणकालीन शैलचित्रों की खोज की थी।
- छत्तीसगढ़ में नवपाषाणकालीन शैलचित्रों की खोज रमेन्द्रनाथ मिश्र व भगवान सिंह ने की थी।

➢ **महत्वपूर्ण खोज :–**

क्र.	खोजकर्ता	स्थान	विशेष
1.	जे.आर. कांबले एवं रमेन्द्र मिश्र	गढ़धनोरा एवं कोण्डागांव	500 महापाषाण घेरे
2.	एंडरसन	रायगढ़	सिंघनपुर एवं कबरा पहाड़
3.	कर्नल आउसले	सरगुजा	सीताबेंगरा की गुफा
4.	रमेन्द्र मिश्र एवं विष्णु ठाकुर	कोण्डागांव	एडेंगा से वराहराज की 29 स्वर्ण मुद्राएं
5.	बी.एस. बघेल एवं रमेन्द्रनाथ मिश्र	राजनांदगांव	चितवाडोंगरी

वैदिक कालीन छत्तीसगढ़

ऋगवैदिक काल (1500 ई.पू.– 1000 ई.पू.)

- ऋग्वैदिक काल में छत्तीसगढ़ के मानव जाति होने का कोई प्रमाण नहीं मिलता है।

उत्तरवैदिक काल (1000 ई.पू.– 600 ई.पू.)

- इस काल में मानव जाति का प्रसार छ.ग. में था।
- शतपथ ब्राम्हण में पूर्व व पश्चिम में स्थित समुद्रो का उल्लेख मिलता है।
- कौषीतकि उपनिषद में विध्यंचल पर्वत का उल्लेख मिलता है।
- वैदिक साहित्य में नर्मदा का उल्लेख रेवा के रूप में मिलता है।

महाकाव्य काल

रामायण काल

राजधानी – श्रीपुर/कुशस्थली/सिरपुर

छत्तीसगढ़ का नाम – दक्षिण कौसल

बस्तर का नाम – दण्डकारण्य

महाभारत काल

राजधानी – सिरपुर/चित्रांगदपुर

छत्तीसगढ़ का नाम – कोसल/प्रागकोसल

बस्तर का नाम – कांतार

रामायण कालीन छत्तीसगढ़

- रामायण के रचनाकार – वाल्मिकी
- रामायण आधारित अन्य रचना
  - ✓ रामचरित मानस – तुलसीदास
  - ✓ रामायण मीमांसा – स्वामी करपात्री जी
- राम की माता कौशल्या राजा भानुमन्त की पुत्री थी कोसल खण्ड नामक एक अप्रकाशित ग्रन्थ से इसकी जानकारी मिलती है।
- कौशल्या, कोसल प्रदेश की राजकुमारी तथा अयोध्या के राजा दशरथ की पत्नी थी।
- श्री राम के पश्चात – उत्तरकोसल के राजा उनके ज्येष्ठ पुत्र लव हुए इनकी राजधानी श्रवस्ती थी और अनुज कुश को दक्षिण कोसल मिला, जिसकी राजधानी कुशस्थली थी।
- **रामायण कालीन प्रमुख स्थल :–**

क्र.	स्थल	जिला	विशेषता
1.	**रामगढ़ की पहाड़ी**	**सरगुजा**	सीताबेंगरा, रामगढ़, लक्ष्मणबेंगरा, किसकिंधा पर्वत, सीताकुण्ड हाथीखोह
2.	**रामझरना**	**रायगढ़**	रामझरना
3.	**शिवरीनारायण**	**जांजगीर–चांपा**	शबरी का निवास, राम के शबरी के जूठे बेर खाये।
4.	**खरौद**	**जांजगीर–चांपा**	खरदूषण का वध, लक्ष्मण द्वारा लक्ष्मणेश्वर शिवलिंग की स्थापना।
5.	**तुरतुरिया**	**बलौदाबाजार**	वाल्मिकी आश्रम, लव–कुश की जन्मस्थली
6.	**पंचवटी**	**कांकेर**	सीताहरण यही से हुआ।
7.	**सिहावापर्वत**	**धमतरी**	श्रृंगीआश्रम, श्रीराम ने राक्षसों के आतंक से साधुओं को मुक्ति दिलायी।
8.	**दण्डकारण्य**	**बस्तर संभाग**	भगवान हनुमान के द्वारा संजीवनी बूटी लाते समय दण्डकारण्य के घने जंगलों का वर्णन मिलता है।
9.	**राजिम**	**गरियाबंद**	लोमस ऋषि का आश्रम।
10.	**गुंजी**	**सक्ति**	जटायु पर्वत
11.	**सीतामढ़ी हरचौका**	**मनेन्द्रगढ़**	भगवान राम यहीं से छत्तीसगढ़ में प्रवेश किये थे।

महाभारत कालीन छत्तीसगढ़

- महाभारत के लेखक – श्रीगणेश
- रचियता – वेदव्यास जी
- महाभारत कालीन नाम :–
  - ✓ छत्तीसगढ़ – **प्राक्कोसल/कोसल**
  - ✓ बस्तर – **कान्तार**
- **महाभारत कालीन प्रमुख स्थल**

क्र.	स्थल	जिला	विशेषता
1.	**कपाटद्वार**	**सरगुजा**	महाभारत कालीन स्थल
2.	**रतनपुर**	**बिलासपुर**	ताम्रध्वज की राजधानी
3.	**गुंजी**	**सक्ती**	ऋषभतीर्थकर का वर्णन, भीमा तालाब
4.	**सिरपुर (चित्रांगदपुर)**	**महासमुंद**	अर्जुन के पुत्र बभ्रुवाहन की राजधानी
5.	**खल्लारी**	**महासमुंद**	भीमखोह, लाक्षागृह
6.	**भांडेक (आरंग)**	**रायपुर**	मोरध्वज की राजधानी

बौद्धकाल

- बौद्धग्रंथ अवदान शतक के अनुसार गौतमबुद्ध दक्षिण कोसल की यात्रा पर आये थे।
- प्रसिद्ध बौद्ध भिक्षुक एवं चीनी यात्री व्हेनसांग सन् 639 ई. में महाशिवगुप्त बालार्जुन के दरबार में सिरपुर आये थे।
- व्हेनसांग ने अपनी रचना सी.यू.की में –
  - ✓ दक्षिणकोसल को **क्सा–सी–लो** कहा।
  - ✓ इन्होने इस काल को छत्तीसगढ़ का **स्वर्णकाल** कहा।
  - ✓ व्हेनसांग के अनुसार महासम्राट अशोक ने सिरपुर में बौद्धस्तूप बनाया था। परंतु वर्तमान में इसका कोई साक्ष्य नहीं है।
  - ✓ सिरपुर में ही अनेकों बौद्धविहार का वर्णन किया जो पाये भी गये है।
  - ✓ व्हेनसांग ने अनुसार प्रसिद्ध बौद्ध भिक्षुक नागार्जुन पहली शताब्दी में दक्षिण कोसल की यात्रा पर आये थे जिस समय सातवाहन राजाओं का शासन चल रहा था। सातवाहन राजाओं ने बौद्ध भिक्षुक नागार्जुन के लिए सुरंग खुदवाकर 5 मंजिला भव्य संधाराम का निर्माण करवाया।
- बौद्ध ग्रंथ अंगुतर निकाय में छत्तीसगढ़ का उल्लेख किया गया है वहीं 6वीं शताब्दी में बौद्ध भिक्षुक प्रभु आनंद ने सिरपुर में स्वास्तिक विहार एवं आनंद कुटी विहार का निर्माण करवाया था।

संबंधित स्थल	स्थान	साक्ष्य
सिरपुर	महासमुंद	बौद्धकालीन प्रतिमाएँ व प्रसिद्ध स्थल सिरपुर में प्रतिवर्ष वैशाख पूर्णिमा को बौद्ध महोत्सव मनाया जाता है।
भोंगापाल	कोण्डागांव	बौद्ध बिहार
मल्हार	बिलासपुर	बौद्ध मंदिर एवं चैत्य के अवशेष
डोंगरगढ़	राजनांदगांव	डोंगरगढ़ के प्रज्ञागिरी पर्वत पर प्रतिवर्ष बौद्ध सम्मेलन का आयोजन किया जाता है।

जैन धर्म

- पेलगर के अनुसार छत्तीसगढ़ मगध (पटना) महाजनपद के अंतगर्त आता था।
- जैनधर्म ग्रंथ भगवती सूत्र के अनुसार एक कोशल महाजन था। जिसके दो भाग थे उत्तरकोशल व दक्षिण कोशल जिसमें छत्तीसगढ़ दक्षिण कोशल का हिस्सा था।
- **जैनधर्म से संबंधित स्थल :–**

1.	**गुंजी (दमउदरहा)** **बुदीखार (मल्हार)**	**ऋषभनाथ**	प्रथम तीर्थकर
2.	**भाटागुडा (बस्तर)**	**शांतिनाथ**	सोलहवें तीर्थकर
3.	**नगपुरा (दुर्ग)**	**पार्श्वनाथ**	तेइसवें तीर्थकर
4.	**आरंग (रायपुर)**	**महावीर स्वामी**	चौबीसवें तीर्थकर

सातवाहन काल

- **शासनकाल** – **200 ई.पू.–100 ई.**
- **राजधानी** – **प्रतिष्ठान/पैठन**
- **छ.ग. का नाम** – **दक्षिणापथ**
- **समकालीन शासक** – **ओड़िसा के चेदिवंशी (खारवेल)**
- सर्वप्रथम गोतमीपुत्र सातकर्णी (106ई.–130ई.) ने कलिंग तथा कोसल पर विजय प्राप्त की और उन्हें सातवाहन साम्राज्य के अन्तर्गत सम्मिलित किया। इस प्रकार सौ वर्ष पूर्व खारवेल ने जिस क्षेत्र को हस्तगत किया था, गोतमी पुत्र ने उसे स्वाधीन बनाया और अपनी पराजय को जय में परिणत कर दिया।
- सातवाहन वंश के अनेक राजाओं का राज्यविस्तार दक्षिण कोशल में हो गया था तथा ये 200 ईस्वी के लगभग छत्तीसगढ़ के अनेक अंचलों में राज्य कर रहे थे।
- चीनी यात्री युवान –च्वांग (व्हेनसांग) के अनुसार सातवाहन शासकों ने प्रसिद्ध बौद्ध भिक्षुक नागार्जुन के लिए संरंग खुदवाकर भव्य संघाराम 5 मंजिला बनवाया।
- इस वंश के सिक्के तांबे का आयताकार का होता था, जिस पर एक ओर हाथी तथा दूसरी ओर स्त्री व नाग अंकित था।
- सातवाहन शासक खुद को दक्षिणापथ का स्वामी कहते थे। इनके द्वारा अश्वमेश व राजुस यज्ञ के प्रमाण मिलते थे।
- बुढ़ीखार नामक स्थान से लेखयुक्त प्रतिमा प्राप्त हुई है जो सातवाहन काल के है।
- सातवाहन शासक ब्राम्हणजाति के थे।
- सातवाहन शासक अपीलक की मुद्रा **मल्हार** व **बालपुर** से प्राप्त हुआ है।
- सातवाहन कालीन रोमन सिक्के **चकरबेड़ा** से प्राप्त हुआ है। इस प्रकार इस काल मे छ.ग. का व्यापार **रोम** से होता था।
- मल्हार से मिट्टी के मोहर प्राप्त हुआ है जिसमें वेदश्री वर्णन है।

मेघवंश

- देवानां प्रिय अशोक के पश्चात् मौर्य साम्राज्य प्रायः शिथिल होता गया तथा इसी बीच कलिंग ने भी मौर्य साम्राज्य से निकलकर अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी थी तथा वहाँ महामेघवंश का उदय हुआ इस वंश के तृतीय राजा खारवेल का 182 ईसापूर्व में राज्याभिषेक हुआ। खारवेल अल्पावधि में ही एक शक्तिशाली राजा बन गया तथा उसकी अधीनता में छत्तीसगढ़ के आटविक गणराज्य के अधिकांश क्षेत्र आ गए। खारवेल की हाथीगुफाप्रशस्ति में इस क्षेत्र को अपराजेय विद्याधराधिवास' कहा गया है विद्याधरधिवासं अहतपूर्वं। इस प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि खारवेल ने अपने शासन के चतुर्थ वर्ष में अपराजेय विद्याधराधिवास'' से रत्न और मूल्यवान् सामग्री छीन ली थी। यह एक ऐसा क्षेत्र था, जहाँ कलिंग को प्राचीनकाल से ही आटविकवल मिलता था।
- ऐसा प्रतीत होता है कि महामेघवंश राज्य के कारण छत्तीसगढ़ में जैनधर्म का प्रचार–प्रसार हुआ होगा खारवेल जन्मतः जैनधर्मावलम्बी था। अतएव उसके प्रभाव से छत्तीसगढ़ में जैनधर्म का प्रचार स्वाभाविक था।
- **मेघवंश के राजा शिवमेध व यमेध के प्रमाण मल्हार से मिलता है।**
- इस वंश के राजाओं का प्रमाण पुराणों से मिलता है।
- मल्हार से मेघवंशीय राजाओं के सिक्के प्राप्त हुए है।

कुषाण वंश

- बिलासपुर – कुषाणकालीन तांबे के सिक्के प्राप्त हुए है।
- तेलीकोटा – कनिष्क के सिक्के
- धरसीवा – वीक्षक के सिक्के

वकाटक, गुप्त व नलवंश

- दूसरी शताब्दी से पांचवी शताब्दी तक दक्षिण कोसल अर्थात छत्तीसगढ़ कभी समकालीन वाकाटकों के तो कभी गुप्तों के प्रभाव क्षेत्र में रहा, उत्तर भारत में जहां गुप्तों की तूती बोलती थी, वहां दक्षिण भारत में वाकाटक सिंह गर्जना करते थे। इन दोनों राजवंशों के अभिलेखों तथा मुद्राओं से इस अंचल में उनकी उपस्थिति अभिप्रभावित होती है, गुप्त वंश के महाराजधिराज चंद्रगुप्त की बेटी प्रभावती गुप्त का विवाह वाकाटक नरेश रूद्रसेन द्वितीय में हुआ था। इस विवाह से वाकाटकों की दशा कुछ और हो गई, और वे एक प्रकार से गुप्तों के अधीन हो गए, क्योंकि हम देखते हैं कि स्वयं वाकाटाकों के लेखों में जहां कहीं भी गुप्तों और वाकाटकों का एक साथ उल्लेख मिलता है, वाकाटक अपने को महाराज और गुप्तों को महाराजाधिराज कहते हैं।'' सातवाहन साम्राज्य के पतन के पश्चात् पूर्वी दकन क्षेत्र में अर्थात वर्तमान महाराष्ट्र के पूर्वी भाग में वाकाटक राजवंश का उदय हुआ । प्रभावती गुप्ता के पूना ताम्रपट से यह निश्चित होता है कि वाकाटक राजा सामान्यतः गुप्तों के समकालीन थे, तथापि उनमें से प्रत्येक राजा के राज्यकाल के वर्ष आज भी अनिर्णित हैं।

नलनाग वंश (3री. से 12वीं शताब्दी)

- भारतीय इतिहास के आधार, पुराण व महाकाव्य रहे हैं। वायु पुराण और ब्रहमांड पुराण में वर्णन है कि पौराणिक शासक नल के वंशजों का कोसल प्रदेश शासन होगा। डॉ. पी.एल. मिश्रा ने लिखा है– पुरातात्विक आधार पर दक्षिण कोसल का इतिहास मेरे दृष्टि से चौथी शताब्दी से निरंतर शुरू हो जाता है और सबसे पहले इसका सूत्रपात इलाहाबाद की समुद्रगुप्त की प्रशस्ति से प्रारंभ होता है।
- **राजधानी** – कोरापुट/पुष्करी (भोपालपट्टनम)
- **संस्थापक** – शिशुक
- **वास्तविक संस्थापक** – वराहराज
- **वर्णन** – वायु एवं ब्राम्हण पुराण में नलनागवंश का वर्णन है।
- **वंशावली** – 1. शिशुक
  2. व्याघ्रराज
  3. वृषराज
  4. वराहराज
  5. भवदत्तवर्मन
  6. स्कंदवर्मन
  7. स्तंभराज
  8. नंदराज
  9. पृथ्वीराज
  10. वीरूपाक्ष
  11. विलासतुंग
  12. पृथ्वीव्याघ्र
  13. भीमसेन
  14. नरेन्द्रबल

1. **शिशुक**
   ✓ नल–नाग वंश का संस्थापक माना जाता है।
2. **व्याघ्रराज**
   ✓ समुद्रगुप्त के प्रयागप्रशस्ति शिलालेख के अनुसार दक्षिण विजय अभियान को जाते समय व्याघ्रराज को पराजित कर इन्हानें **व्याघ्रहंता** की उपाधि धारण की।
3. **वृषराज**
4. **वराहराज (400–440 ई.)**
   ✓ इस वंश का वास्तविक संस्थापक था।
   ✓ कोंड़ागांव के एडेंगा के मुद्राभाण्ड से वराहराज के 29 स्वर्ण सिक्के प्राप्त हुए है।
   ✓ स्वर्ण सिक्के जारी करने वाला पहला शासक हुआ।
5. **भवदत्त वर्मन**
   ✓ इस वंश का सबसे प्रतापी व महत्वकांक्षी राजा था।
   ✓ राज्य विस्तार के लिये वकाटक वंशीय राजा नरेन्द्रसेन पर आक्रमण कर उसे पराजित किया तथा नंदीवर्धन को तहस नहस किया।
   ✓ युद्ध के समय अपने पुत्र अर्थपति भट्टारक को साथ लेकर गये।
   ✓ ऋद्धिपुर (अमरावती) ताम्रपत्र जारी किया।
   ✓ इन्होने सोने के सिक्के चलाये।
   ✓ युद्ध जीतने के पश्चात इन्होने पुष्करी/भोपालपट्नम को राजधानी बनाया।
   ✓ सर्वाधिक राज्य विस्तार करने वाले राजा हुए। बस्तर तथा कोसल क्षेत्र में वकाटकों को पराजित कर अपने साम्राज्य को नागपुर व बस्तर तक कर लिया।
   ✓ **महाराजा/भट्टारक** की उपाधि धारण की।

6. अर्थपति भट्टारक

- ✓ राजधानी – पुष्करी
- ✓ बरार से लेकर उड़ीसा तक अपना क्षेत्र विस्तार किया।
- ✓ यह कमजोर शासक माना जाता है।
- ✓ वकाटक वंशीय राजा पृथ्वीसेन द्वारा पराजित हुआ।
- ✓ पुस्करी तहस–नहस होन के कारण पुनः कोरापुट को राजधानी बनाया गया। बहुत सारे क्षेत्र खो दिये।
- ✓ एड़ेगा निधि से दो सिक्के प्राप्त हुए है।
- ✓ पराजित होने पर केसरीबेड़ा अभिलेख जारी किया तथा इस अभिलेख में अर्थपति को **महेश्वर, महासेनापति, सृष्टिराज्य विभव, त्रिपताकायुद्ध नल नृपति कुलान्वय** तथा **महाराज भट्टारक** आदि विरूदों से विभूषित किया गया है।
- ✓ सोने के सिक्के जारी किये।

7. स्कंद वर्मन

- ✓ भवदत्त वर्मन का अनुज पुत्र था। अर्थपति भट्टारक से अधिक योग्यशासक था।
- ✓ इन्होने खोये हुए साम्राज्य को वापस पाया।
- ✓ वकाटक वंशीय राजा हरिसेन को पराजित किया और उन्हें उत्तर खदेड़ा व पुनः **पुस्करी** को राजधानी बनवाया।
- ✓ पोड़ागढ़ में विष्णुमंदिर बनवाया।
- ✓ पोड़ागढ़ शिलालेख (इस वंश का पहला शिलालेख) जारी किया **जिसमें विजय था, विजय है, विजय रहेगा लिखवाया।**
- ✓ सोन के सिक्के चलाये।
- ✓ शैवधर्म से वैष्णवसंप्रदाय का होना भी पोड़ागढ़ शिलालेख में लिखा जाता है।

8. स्तम्भराज

- ✓ दुर्ग जिले के **कुलिया** नामक स्थान से प्राप्त मृद्राभाण्ड से नंदराज व स्तम्भराज की जानकारी मिलती है।

9. नंदराज

- ✓ नालंदा विश्वविद्यालय में पढ़ा है।

10. पृथ्वीराज (605 ई.–630 ई.)

- ✓ शिव के विरूपाक्ष रूप का पुजारी था। विलासतुंग के राजिम शिलालेख में वर्णन है।
- ✓ शैवधर्म के उपासक थे।

11. वीरूपाक्ष

- ✓ बहुत ही सुन्दर, सत्यवादी व रूपवान राजा था।

12. विलासतुंग (700–740 ई.)

- ✓ प्रतापी व महत्वकांक्षी राजा था।
- ✓ पाली के बाणवंश शासक विक्रमादित्य के साथ मिलकर सिरपुर के पाण्डुवंशीय राजा महाशिवगुप्त बालार्जुन को पराजित किया और दक्षिण की ओर खदेड़ा व अपना साम्राज्य विस्तार किया।
- ✓ राजिम के राजीवलोचन मंदिर का निर्माण करवाया और वहां राजिम शिलालेख लिखवाया जहां पर वीरूपाक्ष व पृथ्वीराज का वर्णन है।

13. पृथ्वीव्याघ्र

- ✓ पल्लव नंदीवर्धन के **उदयेन्दिरम्** दानपत्र से जानकारी मिलता है।

14. भीमसेन कार्यकाल (900– 925 ई.)

- ✓ **महाधिराज परमेश्वर** की उपाधि धारण की।

15. नरेन्द्रथबल

- ✓ इस वंश का अंतिम शासक हुआ।

नल–नागवंश का अभिलेख

क्र.	राजा	शिलालेख/अभिलेख	स्थान
1.	भवदत्त वर्मन	ऋद्धिपुर ताम्रपत्र	अमरावती
2.	अर्थपति भट्टारक	केसरीबेड़ा ताम्रपत्र	बस्तर
		पण्डियायार पाथर अभिलेख	ओड़िसा
3.	स्कंद वर्मन	पोड़ागढ़ शिलालेख (विजय था, विजय है, विजय रहेगा)	बस्तर
4.	विलासतुंग	राजिम शिलालेख	

- **स्वर्ण सिक्के जारीकर्ता नलनागवंशीय शासक**
  1. भवदत्त वर्मन
  2. अर्थपति भट्टारक
  3. स्कंदवर्मन
  4. वराहराज

- **स्थापत्य कला**
  1. पोड़ागढ़ विष्णु मंदिर
  2. राजीवलोचन मंदिर

- **नलनाग वंश के प्राप्त सिक्के :–**

राजा	सिक्कों की संख्या
वराहराज	29
भवदत्त	03
नन्दराज	01
स्तम्भराज	01

- **नल–नाग वंश की राजव्यवस्था**

क्षेत्र **प्रमुख**

राज्य – राजा
↓
मण्डल माण्डलीक
↓
प्रांत
↓
राष्ट्र
↓
पुर
↓
गांव

- **नल–नाग वंश के साक्ष्य**

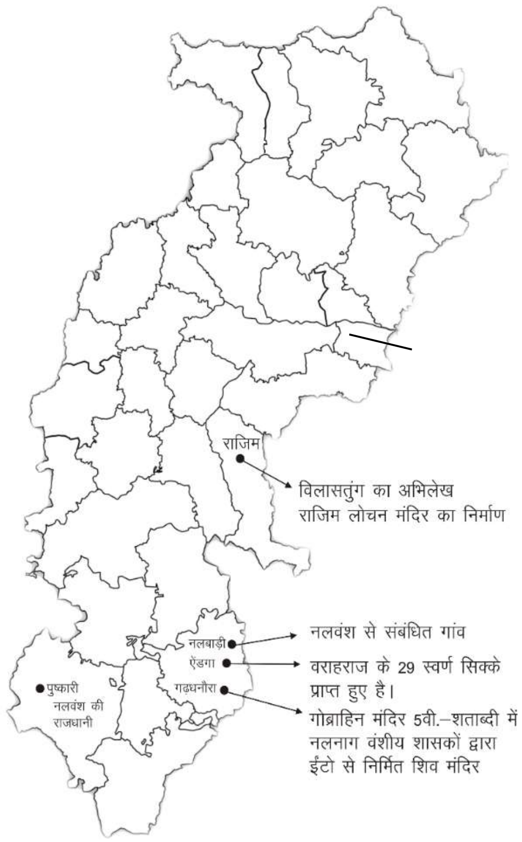

सिरपुर के पाण्डू वंश/सोमवंश (6वी. से 7वी शताब्दी)

- सोमवंश के बारे में विवरण प्रस्तुत करने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि सोमवंश दक्षिण कोशल का ही राजवंश है। उल्लेखनीय है कि उड़ीसा का संबलपुर और कालाहांडी क्षेत्र 1905 ई. तक छत्तीसगढ़ के अंग थे। बंगाल विभाजन के फलस्वरूप भौगोलिक सीमाओं में जो परिवर्तन हुआ उससे उपरोक्त भाग उड़ीसा में सम्मिलित किए गए।
- ''सोमवंशी राजाओं के अनेक अभिलेख मेकल, कोसल व उत्कल क्षेत्र से प्राप्त हुए हैं। जिनसे इस वंश के बारे में पर्याप्त जानकारी उपलब्ध होती है। साहित्यिक सिक्के संबंधी व स्थापत्य संबंधी प्रमाण भी इनके इतिहास को प्रस्तुत करने में सहायक रहे हैं।''
- ''सोमवंशी शासक कोसल या छत्तीसगढ़ कोसल के ही शासक थे, उड़ीसा के नहीं, इसीलिए छ.ग. कोसल के इतिहास में सोमवंश पूर्णतः उचित है।
- मेकल, कोसल व उत्कल क्षेत्र से प्राप्त अभिलेखों के आधार पर निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि सोमवंशी जो पाण्डुवंशी भी कहलाते है, चंद्र से उत्पन्न हैं। सोमवंशी राजा महान चंद्र वंश के थे,
- शरभपुरीयों के पश्चात कोशल प्रदेश में शासन करने वाला महत्वपूर्ण राजवंश पाण्डू राजवंश था। ये सोमवंशी भी कहलाते है।

संस्थापक – इन्द्रबल
राजधानी – सिरपुर

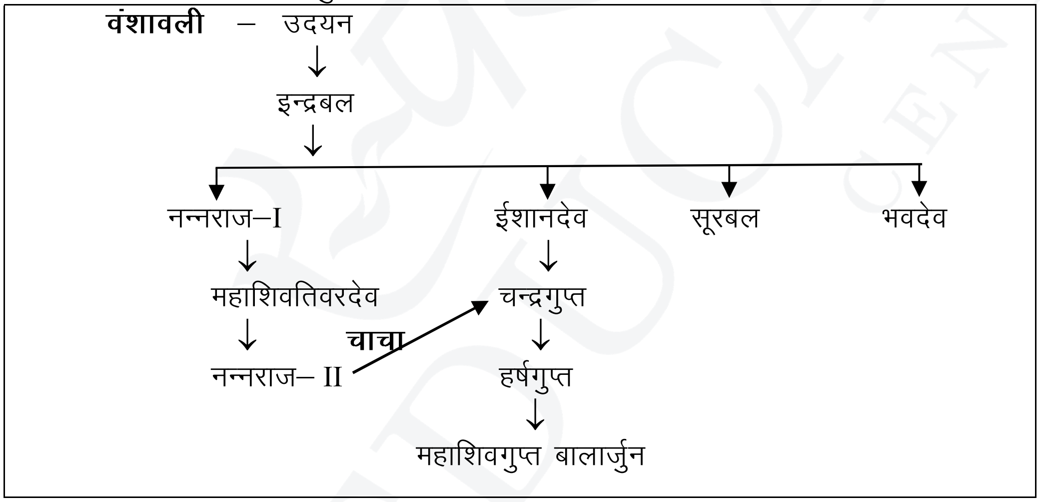

- पाण्डूवंशीयों ने पहली बार इस प्रदेश को कोशल प्रदेश और अपने को कोसलाधिपति कहा। इनके ताम्रपत्र सिरपुर से जारी किये गये।
- पाण्डुवंशी 2 लिपियों का प्रयोग करते थे।
  - ✓ ताम्रपत्रों – पेटिका शीर्षलिपित
  - ✓ शिलालेखों – कलाक्षर लिपि
- इस वंश के शासक तीवरदेव का पहला ताम्रपत्र राजिम ताम्रपत्र 1785 में प्राप्त हुआ।

1. **उदयन**
   - ✓ पांडुवंशीयों के शासक क्रम में पहला नाम उदयन का आता है।
   - ✓ इसका उल्लेख भवदेव **रणकेसरी** के **भांडक शिलालेख** में शासक के रूप में किया गया है।
   - ✓ अपने पुत्र इन्द्रबल को प्रवरराज को मारने का सुझाव दिया।
   - ✓ कांलिजर अभिलेख (गोरखपुर– उ.प्र.) में इनका वर्णन है।
   - ✓ उदयन को **आदि पुरूष** कहा जाता था।
2. **इन्द्रबल**
   - ✓ सिरपुर के पाण्डुवंश का वास्तविक संस्थापक था।
   - ✓ इनका दूसरा नाम भरतबल था।
   - ✓ इनका विवाह कोसल की राजकुमारी लोकप्रकाशा से हुआ था। जो शरभपुरवंश की राजकुमारी थी।

- ✓ इन्होने इंद्रपुर (खरौद) शहर की स्थापना की।
- ✓ ईशानदेव (इन्द्रबल का बेटा) ने खरौद में **लक्ष्मणेश्वर मंदिर** की स्थापना की। इस मंदिर की परंपरा के अनुसार इस मंदिर में **1 लाख चावल** चढ़ाने की परम्परा है।
- ✓ शरभपुरीय राजा महासुदेवराज के महासम्रुद और कौआताल अभिलेखों में उल्लेखित **सर्वधिकरणंधिकृत** 'इंद्रबल राज' का वर्णन किया गया है।
- ✓ इन्द्रबल का दूसरा पुत्र सूरबल था जिसका उल्लेख सिरपुर में तथा तीसरे पुत्र इशानदेव का उल्लेख खरौद के लक्ष्मणेश्वर मंदिर वहीं चौथे पुत्र भवदेव रणकेसरी के विषय में जानकारी उसके भांदक शिलालेख से प्राप्त होता है।

3. नन्नराज–I

- ✓ इन्द्रबल के चार पुत्र थे, जिसमें सबसे बड़ा नन्नराज–I है।
- ✓ इनके काल में पाण्डुवंश का राज्य विस्तार एक बड़े भू–भाग में हो चुका था। इन्होने अपने तीनों भाईयों को **मण्डलाधिपति** की उपाधि दी और उन्हे एक–एक मण्डल का प्रमुख बनाया।
- ✓ आरंग शिलालेख में नन्नदेव के लिए **नृपशब्द** का प्रयोग हुआ है।

4. महाशिव तीवरदेव

- ✓ अपने वंश का सबसे प्रतापी व महत्वकांक्षी राजा था।
- ✓ महाशिव तीवर के रूप में इनका वर्णन ताम्रपत्रों में हुआ हैं, जबकि मुद्रा में तीवरदेव लिखा है।
- ✓ तीवरदेव इनके नाम थे व **महाशिव** इनकी **शाही उपाधि** थी।
- ✓ सर्वाधिक राज्य का विस्तार किया। इसलिए इनके काल को पाण्डुवंश के काल का उत्कर्षकाल कहा जाता है। इसकी जानकारी नन्नराज–II के अड़भार ताम्रपत्र से होता है।
- ✓ कोसल व मैकल को जीतने के बाद इन्हे सकल कोसलाधिपति की उपाधि दी गयी तथा इन्होंने मुद्रा में स्वंय को **कोसलाधिपति** कहा था।
- ✓ इनके तीन ताम्रपत्र प्राप्त हुए।
  1. राजिम (परमवैष्णव कहा)
  2. बालोद
  3. बोड़ा (रायगढ़ 1958 में)
- ✓ ये वैष्णव धर्म के अनुयायी थे। परम वैष्णव के रूप में इनकी उपाधि थी इन्होनें अपनी मुद्रा में **गरूड़ उत्कीर्ण** करवाया था।
- ✓ तीवरदेव के बोड़ा ताम्रपत्र में राजा के गौरव का वर्णन करते हुए इन्होनें पंचमहाशब्द की उपाधि ली।
  - **पंचमहाशब्द से सम्मिलित :–**
    1. **महाप्रतिहारपिदा**
    2. **महासंधिविग्रह**
    3. **महाश्वशाला**
    4. **महाभंडागार**
    5. **महासाधन भाग**
- ✓ तीवरदेव के पुत्र व दमाद का नाम नन्नराज था। इन्होंने अपने दामाद नन्नराज को पंचमहाशब्द की उपाधि दी थी।
- ✓ विष्णुकुण्डी के युद्ध में माधववर्मन–I से युद्ध करता हुआ मारा गया।

5. नन्नराज – II

- ✓ नन्नराज – II ने उत्कल का भाग खो दिया, राज्य संकुणित होते चले गये। किन्तु इन्होने अपना विस्तार साम्राज्य विस्तार वर्धा (MP) तक कर लिया था। इनके सामंत देवरक्षीत का प्रमुख योगदान रहा।
- ✓ अढ़भार ताम्रपत्र में इनका वर्णन है।
  (इस ताम्रपत्र में इन्होनें अपने पिता के बारे में अधिक विवरण दिया है।)
- ✓ इनको एक कमजोर शासक माना गया है।
- ✓ कोसमण्डलाधिपति की उपाधि धारण की थी।
- ✓ नन्दराज–II निःसंतान थे।
- ✓ इनकी आकस्मिक मृत्यु हुई।

6. चन्द्रगुप्त

- ✓ नन्नराज–II निःसंतान होने के कारण राजा चन्द्रगुप्त को गद्दी पर बैठाया गया।
- ✓ माधव वर्मन द्वारा जीते गए प्रदेशों को फिर से प्राप्त किया।
- ✓ सिरपुर के लक्ष्मण मंदिर स्थित शिलालेख में राजा चन्द्रगुप्त का उल्लेख है।
- ✓ अपने सामंतों का वापस पाया।

7. हर्षगुप्त

- ✓ हर्षगुप्त का उल्लेख हर्षदेव के रूप में भी मिलता है।
- ✓ इनका विवाह मगध के राजा सूर्यवर्मा की पुत्री वासटादेवी से हुआ था।
- ✓ हर्षगुप्त वैष्णवमतावंलबी था।
- ✓ इनकी स्मृति में सिरपुर और विष्णुमंदिर बनाया गया जो आज भी लक्ष्मण मंदिर के रूप में विद्यमान है।

8. महाशिवगुप्त बालार्जुन

- ✓ बाल्यकाल से ही पाण्डुवंशीय अर्जुन की तरह तीर चलाने में माहिर था, इसलिए इनका नाम बालार्जुन कहलाया।
- ✓ इन्होने लगभग 60 वर्षो तक शासन किया।
- ✓ इनके पिता हर्षगुपत व इनकी माता वासटादेवी थी।
- ✓ इनकी राजधानी सिरपुर थी।
- ✓ अभिलेखों के अनुसार महाशिवगुप्त बालार्जुन शैवधर्म के अनुयायी थे।
- ✓ महाशिवगुप्त के शासनकाल में 639 ई. में प्रसिद्ध चीनी यात्री व्हेनसांग ने छत्तीसगढ़ सिरपुर व मल्हार की यात्रा पर आये थे।
- ✓ बालार्जुन की मुद्रा में गजलक्ष्मी के स्थान पर **कुकुदमान वृषभ** तथा **त्रिशुल** का अंकन करवाया, ये दोनों शिव से संबंधित चिन्ह है।
- ✓ इनके काल को पाण्डुवंश का **स्वर्णयुग** भी कहा गया है।
- ✓ इनके समकालीन राजा – हर्षवर्धन (उत्तर), पुलेसिन–II (दक्षिण) में शासन करते थे।
- ✓ 634 ई. में पुलकेसिन उत्तर विजय अभियान को जाते समय महाशिवगुप्त बालार्जुन पर आक्रमण किया और उन्हे पराजित किया। पराजित होने के पश्चात इन्होनें पुलकेसिन–II की अधीनता स्वीकार की।
- ✓ चीनी यात्री व्हेन–सांग इनके दरबार में आये और 6 वर्षो तक रहे।
  - व्हेन–सांग ने अपनी रचना सी–यू–की में छत्तीसगढ़ का वर्णन किया–स–लो के रूप में किया है।
  - व्हेन–सांग के द्वारा यह काल छत्तीसगढ़ का स्वर्णकाल था।
  - कारण – बालार्जुन के काल में सबको धर्मो को आश्रय प्राप्त था।
    1. लक्ष्मण मंदिर (जो विष्णु मंदिर हैं।) का निर्माण करवाया।
    2. बौद्ध भिक्षुक के लिए बौद्ध विहार का निर्माण करवाया।
    3. आरंग में जैन मंदिर बनाया। (भांडल देउल मंदिर)
    4. वैष्णवधर्म से संबंधित लक्ष्मण मंदिर का निर्माण कार्य पूरा करवाया।
  - व्हेनसांग के अनुसार सिरपुर में 100 संघाराम थे। जहां 10,000 बौद्धभिक्षुक निवास करते थे।
- ✓ मल्हार के ताम्रपत्र में महाशिवगुप्त को परमेश्वर की उपाधि एवं इन्हे मातापितृदानुध्याता के नाम से उल्लेखित किया गया।
- ✓ बालार्जुन के काल में वासटादेवी ने हर्षगुप्त की याद में लक्ष्मण मंदिर का निर्माण करवाया।

- **लक्ष्मण मंदिर** –
  1. यह एक विष्णु मंदिर है।
  2. विष्णु के 10 अवतारों का वर्णन है।
  3. यह मंदिर नागरशैली में निर्मित उत्तरगुप्त वास्तुकला का लाल ईंटों से बना बहुत बड़ा नमुना है।
  4. इस मंदिर को छत्तीसगढ़ का ताजमहल की संज्ञा दी जाती है।
  5. प्रेम के प्रतीक के रूप में इस मंदिर का निर्माण हुआ है।

- ✓ 655 ई. में नलनावंशीय राजा विलासतुंग व बलि के बाण वंशीय राजा विक्रमादित्य ने मिलकार महाशिवगुप्त को पराजित किया और उन्हें उड़ीसा खदेड़ा।
- ✓ सिरपुर के पाण्डुवंश का अंतिम शासक
- ✓ बालार्जुन का छ.ग. में सर्वाधिक ताम्रपत्र प्राप्त हुआ।
- ✓ सिरपुर के एक गांव में किसान के खेत से महाशिवगुप्त के कुल **27 ताम्रपत्र** प्राप्त हुए।

- **पाण्डुवंश के शिलालेख –**

शासक का नाम	शासक के शिलालेख
उदयन	• कालिंजर शिलालेख
इन्द्रबल	• कौआताल महासमुंद • मलगा बिलासपुर
नन्नराज–I	• मल्हार ताम्रपत्र में वर्णन ✓ सूरबल – सिरपुर ✓ ईशानदेव – इन्द्रपुर ✓ भवदेव – भांडेक
महाशिव तीवरदेव	• राजिम ताम्रपत्र • बालोद ताम्रपत्र
नन्नराज–II	• अड़भार शिलालेख
चन्द्रगुन्त	• सिरपुर का शिलालेख
महाशिवगुप्त बालार्जुन	• 27 ताम्रपत्र सिरपुर के छ.ग.में सर्वाधिक ताम्रपत्र
हर्षगुप्त	• सिरपुर के लक्ष्मणमंदिर में वर्णन

शासक का नाम	उपाधि
ईशानदेव	मण्डलाधिपति
सूरबल	मण्डलाधिपति
भवदेव	मण्डलाधिपति
महाशिवतीवरदेव	सकलकोसलाधिपति
नन्नराज– II	कोसलाधिपति/कोसलमण्डलाधिपति
हर्षगुप्त	त्रिकलिंगाधिपति

पर्वतद्वारक वंश

- **राजधानी** – गरियाबंद
- **संस्थापक** – सोमन्नराज
- **वंशावली** – सोमन्नराज
    - तुष्टिकर – तेरहासिंघा ताम्रपत्र जारी किया।
    - नन्दराज देव
- सोमन्नराज की माता कौस्तुभेश्वरी के बीमार होने के कारण और उस बीमारी के इलाज के लिए तेल क्षेत्र दान करने का वर्णन है।
- पर्वतद्वारक वंश स्तंभेश्वरी देवी के उपासक थे।

ओड़िसा का सोमवंश (9वीं से 13वीं शताब्दी)

- **राजधानी** –
- **वंशावली** –

1. शिवगुपत – उपाधि – परमभट्टारक/परमेश्वर/महाधिराज/त्रिकलिंगाधिपति
2. महाभवगुप्त–I – जन्मेजय
3. महाशिवगुप्त– I I – ययाति
4. महाभवगुप्त– II – भीमरथ
5. महाशिवगुप्त– II – धर्मरथ
6. महाभवगुप्त – III – नहुस
7. इन्द्ररथ – इन्द्ररथ
8. महाशिवगुप्त – III – चंडीहर
9. महाशिवगुप्त – IV – उधोग केसरी
10. महाशिवगुप्त – V – जन्मेजय
11. महाशिवगुप्त – VI – पुंरजन
12. महाशिवगुप्त – VII – कर्णकेसरी – उपाधि